पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान

24.09.2021

पारि - पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ. आरती गर्ग, निदेशक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान, मध्य क्षेत्र, प्रयागराज के साथ केन्द्र प्रमुख डॉ संजय सिंह एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। कार्यकम के शुभारम्भ में संगोष्ठी के विषय पर आधारित सारांश पुस्तिका का विमोचन किया गया। केन्द्र प्रमुख डा. संजय सिंह ने स्वागत भाषण में कहा कि यद्यपि वनों को मुख्यतः लकड़ी प्राप्त करने के दृष्टिकोण से देखा गया है किन्तु अकाष्ठ वन उपज ही उनके व्यापक स्वरूप को प्रतिबिम्बित करते हैं और उनकी भूमिका ग्रामीण तथा जनजातीय समाज की आजीविका में महत्वपूर्ण है। अतः अकाष्ठ वन उत्पादों के संरक्षण और मूल्यवर्धन की आवश्यकता है। केन्द्र की वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा संगोष्ठी के विषय वस्तु का परिचय दिया गया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम समन्वयक डा. अनीता तोमर ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

कार्यक्रम के प्रथम तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. आरती गर्ग ने हिंदी के विकास पर बल देते हुए ग्रामीण आजीविका हेतु कुटीर उद्योग के अंतर्गत मधुमक्खी पालन से अवगत कराया। साथ ही इसको बढ़ावा देने में राज्य सरकार की सहायता के पहलुओं से भी अवगत कराया। आमंत्रित वक्ता डॉ.सुषमा टमटा, प्रोफ़ेसर, कुमायू विश्वविद्यालय, नैनीताल ने ऑनलाइन माध्यम से औषधीय एवं सुगंध पादप के प्रबंधन तथा व्यापार पर विस्तृत चर्चा करते हुए पहाडी क्षेत्र की जनजातियों की आजीविका में इसके उपयोग पर बल दिया। उन्होने हिमालय को औषधियों का भण्डार बताया तथा ग्रामीण आजीविका में इसके हस्तक्षेप से भी अवगत कराया। डा. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक,हिमालयन वन अनुसधान संस्थान, शिमला ने अकाष्ठ वन उत्पाद के अंतर्गत उत्तर-पश्चिम हिमालय के शुष्क शीतोष्ण क्षेत्रों में पायी जाने वाली मूल्यवान प्रजाति चिलगोजा के उपयोग और संरक्षण पर प्रस्तुतीकरण दिया।

कार्यक्रम के द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ0 जय कुमार, सहायक प्रवक्ता , बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची ने लघु वनोत्पाद का प्रबंधन तथा विपणन द्वारा ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने पर बल दिया। डा. सरला शाशनी, वैज्ञानिक, जी0 बी0 पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, हिमाचल क्षेत्रीय केन्द्र ने कुल्लू घाटी में ग्रामीण महिलाओं के बीच स्थायी आजीविका के संबंध में विस्तृत चर्चा की। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अनीता तोमर ने जंगल जलेबी को वसा युक्त तेल का एक अच्छा स्रोत बताया तथा इसे ग्रामीण आजीविका हेतु एक साधन बताया। केन्द्र की वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने एक बहुद्देशीय पादप - अमरबेल के द्वारा ग्रामीण आजीविका के संतुलन पर चर्चा की । डॉ. संगीता त्रिपाठी, मुख्य तकनीकी अधिकारी, शुष्क वन अनुसन्धान, जोधपुर द्वारा ग्रामीण आजीविका में वृद्धि हेतु अकाष्ठ वनोपज आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम विषय पर प्रस्तुति दी गयी।

डॉ. पी॰ एस॰ नेगी, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश द्वारा कपूर कचरी (*हेडीचियम स्पाइकेटम* स्मिथ) के बीज अंकुरण एवं अंकुर शक्ति सूचकांक पर बुवाई पूर्व उपचार के प्रभाव पर अध्ययन विषय पर व्याख्यान दिया गया । डॉ. टिस्टन देबबर्मा, आजीविका विस्तार वन अनुसंधान केंद्र अगरतला, त्रिपुरा द्वारा पूर्वोत्तर भारत में एनटीएफपी के मूल्यांकन के लिए नियोजित तरीकों और दृष्टिकोणों की समीक्षा विषय पर प्रस्तुति की गयी । डॉ. हिश्मी ज़ामिल हुसैन, प्रमुख, जैवविविधता टाटा स्टील, जमशेदपुर ने जैविक खेती एवं खाद उत्पादन विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. विनोद कुमार, जी.बी. पंत राष्ट्रीय हिमालय पर्यावरण संस्थान, हिमाचल क्षेत्रीय केंद्र ने हिमाचल प्रदेश के तीर्थन घाटी में पारंपरिक मधुमक्खी पालन (*एपिस सेराना*) के संरक्षण और प्रबंधन द्वारा अजीविका का विकास विषय पर प्रस्तुतीकरण

किया। डा. कल्पना मिश्रा वानिकी महाविद्यालय शुआट्स, प्रयागराज ने गैर-लकड़ी वन उत्पाद, महत्व एवं आवश्यकता पर विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया। डॉ. अपूर्व सैकिया, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट द्वारा जिंजिबेरलेस हर्बल गार्डेन विषय पर प्रस्तुति दी गयी। संगोष्ठी के सर्वांगीण सत्र में संस्तुतियाँ प्रस्तुत की गईं।

कार्यक्रम के अंत में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ कुमुद दूबे ने धन्यवाद् ज्ञापन किया। वास्तविक और आभासी दोनों माध्यम से एक साथ आयोजित संगोष्ठी में उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, त्रिपुरा, आसाम, झारखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में डॉ एस0 डी0 शुक्ला तथा रतन गुप्ता के नेतृत्व में साजन कुमार के साथ योगेश कुमार, अंकुर श्रीवास्तव, अमन मिश्रा तथा फराज अहमद का विशेष सहयोग रहा।

संगोष्ठी की संस्तुतियां

- *किसानों के लिए एक अतिरिक्त स्रोत के रूप में औषधीय पौध आधारित कृषि वानिकी को सम्मिलित करने की लाभकारी रहेगा।*
- *सीमांत कृषकों हेतु अकाष्ठ वन उत्पादों के विकास में अनुसंधान की मुख्य चुनौतियों- अकाष्ठ वन उत्पाद प्रजातियों के वाणिज्यिक स्थापन हेतु वानिकी हस्तक्षेप, घरेलूकरण और संरक्षण, संसाधनों का प्रसंस्करण, अपशिष्ट उपयोग, उत्पादों का प्रबंधन तथा विपणन हेतु शोध होना चाहिए।*
- *अकाष्ठ वन उत्पादों का उत्पादन बढ़ाने तथा विभिन्न संगठनों के बीच प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए, सभी हित धारकों के साथ संबंध स्थापित करके प्रसार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है।*
- *आधुनिक उपकरण और प्रौद्योगिकी से मूल्यवर्धन के द्वारा अकाष्ठ वन उत्पादों की उत्पादकता को बढ़ाने सम्बन्धी अनुसंधान पर बल दिया जाना चाहिए।*

- *अकाष्ठ वन उत्पादों का विपणन एक बहुत बड़ी समस्या है। इसलिए इस संबंध में एक निश्चित नीति बनाए जाने की आवश्यकता है।*
- *वानिकी प्रजातियों के रोपण तथा मूल्य संवर्धन तकनीकों के प्रयोग से कृषकों के आर्थिक स्तर में वृद्धि संबन्धित अनुसंधान की सम्भावनाएं हैं।*
- *विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन कार्यक्रम के माध्यम से अकाष्ठ वन उत्पादों का प्रचार तथा प्रसार क्षेत्र विशेष के कृषकों हेतु अति उपयोगी होगा।*
- *अनुसन्धानकर्ताओं को आर्थिक महत्व की अकाष्ठ वन उत्पादों युक्त प्रजातियों का उचित चयन, वृक्ष कृषि फसल माडलों की जानकारी, मृदा परीक्षण, वृक्ष का रख रखाव तथा विपणन जैसे व्यवहारिक बिंदुओं पर विशेष रूप से केन्द्रित रहना चाहिए ।*

प्रथम तकनीकी सत्र

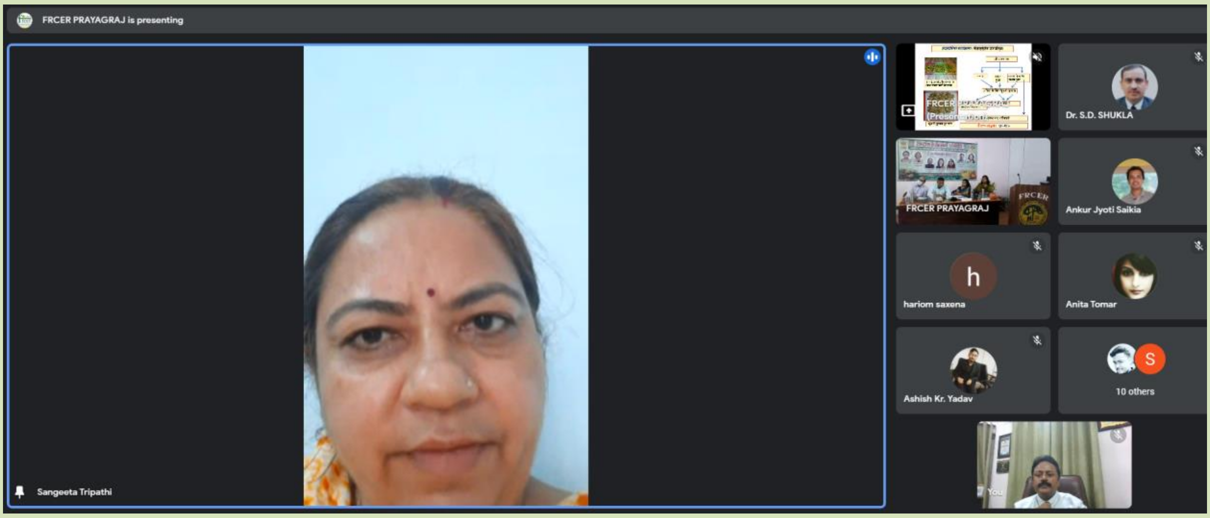
FRCER PRAYAGRAJ is presenting
Sangeeta Tripathi
Dr. S.D. SHUKLA
FRCER PRAYAGRAJ
Ankur Jyoti Saikia
hariom saxena
Anita Tomar
Ashish Kr. Yadav
10 others
You

itcellhfri shimla is presenting
itcellhfri shimla
FRCER PRAYAGRAJ
Ankur Jyoti Saikia
Dr. S.D. SHUKLA
Ashish Kr. Yadav
hariom saxena
Anita Tomar
10 others
You

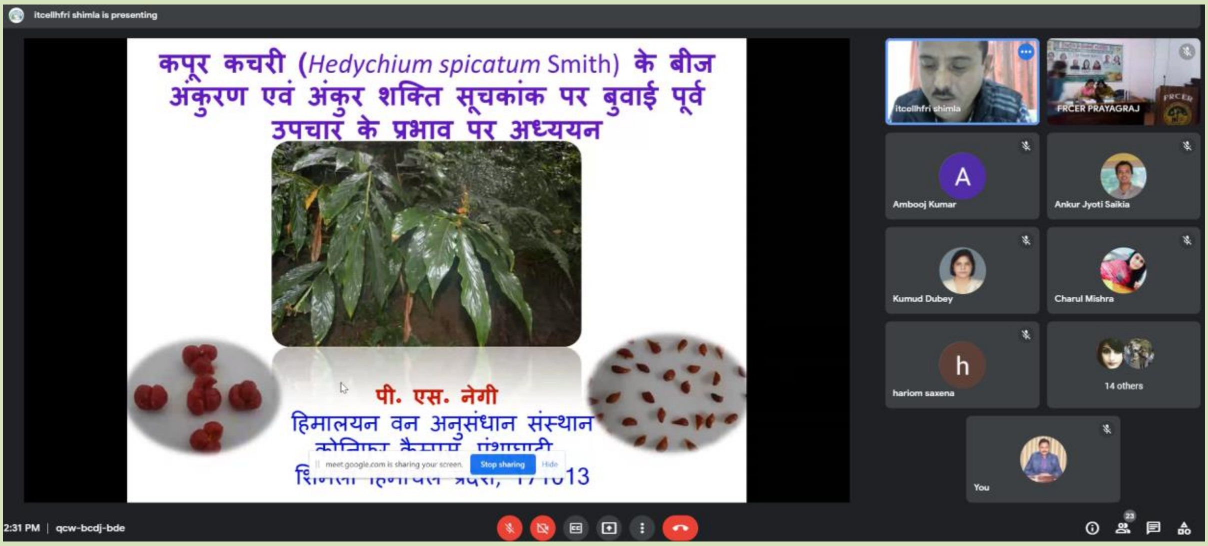
itcellhfri shimla is presenting
कपूर कचरी (Hedychium spicatum Smith) के बीज अंकुरण एवं अंकुर शक्ति सूचकांक पर बुवाई पूर्व उपचार के प्रभाव पर अध्ययन
पी. एस. नेगी
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
meet.google.com is sharing your screen.
Stop sharing
Hide
itcellhfri shimla
FRCER PRAYAGRAJ
Ambooj Kumar
Ankur Jyoti Saikia
Kumud Dubey
Charul Mishra
hariom saxena
14 others
You
2:31 PM | qcw-bcdj-bde

द्वितीय तकनीकी सत्र

Tiston Debbarma is presenting
पूर्वोत्तर भारत में एनटीएफपी के मूल्यांकन के लिए नियोजित तरीकों और दृष्टिकोणों की समीक्षा
Presented by:
Tiston Debbarma
West Tripura, 799012
Tiston Debbarma
FRCER PRAYAGRAJ
Ankur Jyoti Saikia
Dr. S.D. SHUKLA
itcellhfri shimla
Kumud Dubey
Harish Solanky
21 others
qcw-bcdj-bde

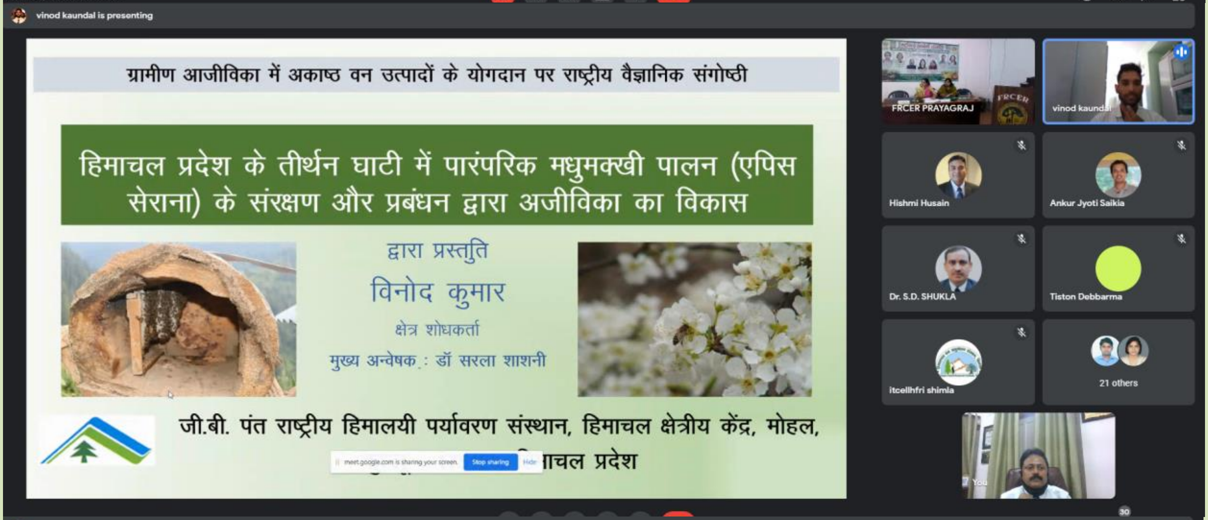
vinod kaundal is presenting
ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों के योगदान पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
हिमाचल प्रदेश के तीर्थन घाटी में पारंपरिक मधुमक्खी पालन (एपिस सेराना) के संरक्षण और प्रबंधन द्वारा अजीविका का विकास
द्वारा प्रस्तुति
विनोद कुमार
क्षेत्र शोधकर्ता
मुख्य अन्वेषक : डॉ सरला शाशनी
जी.बी. पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, हिमाचल क्षेत्रीय केंद्र, मोहल,
FRCER PRAYAGRAJ
Hishmi Husain
Ankur Jyoti Saikia
Dr. S.D. SHUKLA
Tiston Debbarma
itcellhfri shimla
21 others

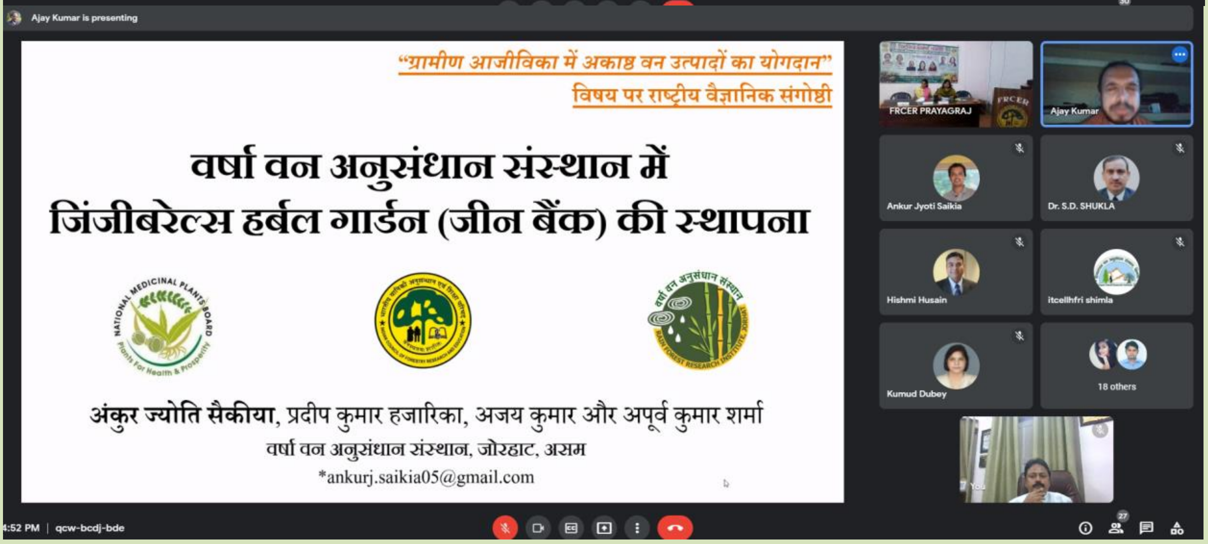
Ajay Kumar is presenting
"ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान"
विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में
जिंजीबरेल्स हर्बल गार्डन (जीन बैंक) की स्थापना
अंकुर ज्योति सैकीया, प्रदीप कुमार हजारिका, अजय कुमार और अपूर्व कुमार शर्मा
वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, असम
*ankurj.saikia05@gmail.com
FRCER PRAYAGRAJ
Ajay Kumar
Ankur Jyoti Saikia
Dr. S.D. SHUKLA
Hishmi Husain
itcellhfri shimla
Kumud Dubey
18 others
qcw-bcdj-bde

मीडिया प्रसार

अकाष्ठ वन उत्पादों के संरक्षण और मूल्यवर्धन की आवश्यकता : डॉ संजय सिंह

'ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान' पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

प्रयागराज(नि.सं.)। पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा शुक्रवार को 'ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के विषय पर आधारित सारांश पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

इस अवसर पर केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि यद्यपि वनों को मुख्यतः लकड़ी प्राप्त करने के दृष्टिकोण से देखा गया है, किन्तु अकाष्ठ वन उपज ही उनके व्यापक स्वरूप को प्रतिबिम्बित करते है और उनकी भूमिका ग्रामीण तथा जनजातीय समाज की आजीविका में महत्वपूर्ण है। अतः अकाष्ठ वन उत्पादों के संरक्षण और मूल्यवर्धन की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान, मध्य क्षेत्र प्रयागराज की निदेशक डॉ. आरती गर्ग ने हिंदी के विकास पर बल देते हुए ग्रामीण आजीविका हेतु कुटीर उद्योग के अंतर्गत मधुमक्खी पालन से अवगत कराया। आचार्य कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल की आचार्य डॉ.सुषमा टमटा ने ऑनलाइन माध्यम से औषधीय एवं सुगंध पादप के प्रबंधन तथा व्यापार पर चर्चा करते हुए पहाड़ी क्षेत्र की जनजातियों की आजीविका में इसके उपयोग पर बल दिया। उन्होने हिमालय को औषधियों का भण्डार बताया तथा ग्रामीण आजीविका में इसके हस्तक्षेप से भी अवगत कराया। डॉ. स्वर्ण लता, हिमालयन वन अनुसधान संस्थान, शिमला ने अकाष्ठ वन उत्पाद के अंतर्गत उत्तर-पश्चिम हिमालय के शुष्क शीतोष्ण क्षेत्रों में पायी जाने वाली मूल्यवान प्रजाति चिलगोजा के उपयोग और संरक्षण पर प्रस्तुतिकरण दिया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची के सहायक आचार्य डॉ.जय कुमार ने लघु वनोत्पाद का प्रबंधन तथा विपणन द्वारा ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने पर बल दिया। डॉ. सरला शाशनी, जीबी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, हिमाचल क्षेत्रीय केन्द्र ने कुल्लू घाटी में ग्रामीण महिलाओं के बीच स्थायी आजीविका के सम्बंध में चर्चा की। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम समन्वयक डॉ.अनीता तोमर ने जंगल जलेबी को वसा युक्त तेल का एक अच्छा स्रोत बताया तथा इसे ग्रामीण आजीविका हेतु एक साधन बताया। कार्यक्रम आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने अमरबेल जो कि एक बहुद्देशीय पादप है, के द्वारा ग्रामीण आजीविका के संतुलन पर चर्चा की। डॉ. नितिषा श्रीवास्तव, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, मध्य क्षेत्रीय केन्द्र, प्रयागराज ने फैबेसी कुल के गोंद उत्पनन करने वाले कुछ महत्वपूर्ण पौधों से रूबरू कराते हुए आजीविका में योगदान पर चर्चा की। वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स डॉ. कल्पना मिश्रा ने गैर लकड़ी वन उत्पाद महत्व एवं आवश्यकता पर विचार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के अंत में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने धन्यवाद ज्ञापन किया। वास्तविक और आभाषी दोनों माध्यम से एक साथ आयोजित संगोष्ठी में उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, त्रिपुरा, आसाम, झारखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ 100 से अधिक प्रतिभागियों के हिस्सा लिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में डॉ. एस.डी शुक्ला तथा रतन गुप्ता के नेतृत्व में साजन कुमार के साथ योगेश कुमार, अंकुर श्रीवास्तव, अमन मिश्रा तथा फराज अहमद का विशेष सहयोग रहा।

वन केवल लकड़ी उत्पाद के माध्यम नहीं: डॉ. संजय

शुक्रवार को आयोजित संगोष्ठी में विचार रखते डॉ. संजय सिंह। • हिन्दुस्तान

प्रयागराज | संवाददाता

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र की ओर से शुक्रवार को ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान की निदेशक डॉ. आरती गर्ग रहीं। ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से विशेषज्ञों ने संगोष्ठी में विचार रखे। संगोष्ठी के विषय पर आधारित सारांश पुस्तिका का विमोचन किया गया। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत करते हुए कहा कि वन केवल लकड़ी उत्पाद के माध्यम नहीं हैं। वन से ही जीवन का संचालन होता है। वन से हमें जिंदगी जीने का मूल आधार तो मिलता ही है। ग्रामीण और जनजातीय समाज की आजीविका में इसका अहम योगदान भी है। मुख्य अतिथि डॉ. आरती गर्ग ने हिंदी के विकास पर बल देते हुए कहा कि वन ग्रामीण क्षेत्रों के लिए आजीविका का मुख्य साधन है। मधुमक्खी पालन से भी अवगत कराया। नैनीताल से डॉ. सुषमा टमटा ने ऑनलाइन शामिल होकर औषधीय और सुगंधित पेड़-पौधों का महत्व बताया। डॉ. स्वर्ण लता बिना लकड़ी वाले प्रजाति चिलगोजा के उपयोग और संरक्षण पर विचार रखे। संगोष्ठी का दूसरा सत्र तकनीकी में रहा, जिसमें डॉ. जय कुमार ने विपणन के माध्यम से आजीविका को बढ़ावा देने पर बल दिया।

अकाष्ठ वन उत्पादों के संरक्षण की जरूरत

PRAYAGRAJ (24 Sept): पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र में 'ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोलते हुए चीफ गेस्ट डॉ आरती गर्ग ने कहा कि वनों को लकड़ी प्राप्त करने का स्रोत माना गया है. यही पूरा सच नहीं है. अकाष्ठ वन उपज में ही वन का व्यापक स्वरूप नजर आता है. ग्रामीण तथा जनजातीय समाज की आजीविका में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है. डा गर्ग ने ग्रामीण आजीविका हेतु कुटीर उद्योग के अंतर्गत मधुमक्खी पालन से अवगत कराया. वक्ता डा सुषमा टमटा, आचार्य कुमायू विश्वविद्यालय, नैनीताल ने ऑनलाइन माध्यम से औषधीय एवं सुगंध पादप के प्रबंधन तथा व्यापार पर विस्तृत चर्चा की.कार्यक्रम के शुभारंभ में सारांश पुस्तिका का विमोचन किया गया. केन्द्र प्रमुख डा संजय सिंह ने कहा कि अकाष्ठ वन उत्पाद असीम संभावनाओं का क्षेत्र है. डा जय कुमार, डा सरला शाशनी, कार्यक्रम समन्वयक डा अनीता तोमर ने जंगल जलेबी को वसा युक्त तेल का एक अच्छा स्रोत बताया. आयोजन सचिव डॉ अनुमा श्रीवास्तव, डा नितिषा श्रीवास्तव, डा कल्पना मिश्रा, डा कुमुद दुबे ने अपनी बात रखी. डा एसडी शुक्ला तथा रतन गुप्ता के नेतृत्व में साजन कुमार के साथ योगेश कुमार, अंकुर श्रीवास्तव, अमन मिश्रा तथा फराज अहमद ने आयोजन को सफ़ल बनाने में योगदान दिया.

लकड़ी के अकाष्ठ वन उपज ही उनके व्यापक स्वरूप को करते हैं प्रतिबिम्बित : डॉ संजय सिंह

इलाहाबाद एक्सप्रेस

प्रयागराज। दिनांक 24.09.2021 को पारि - पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा (ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान) विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ आरती गर्ग, निदेशक भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान, मध्य क्षेत्र, प्रयागराज के साथ केन्द्र प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। कार्यकम के शुभारम्भ में संगोष्ठी के विषय पर आधारित सारांश पुस्तिका का विमोचन किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ संजय सिंह ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि यद्यपि वनों को मुख्यत- लकड़ी प्राप्त करने के दृष्टिकोण से देखा गया है, किन्तु अकाष्ठ वन उपज ही उनके व्यापक स्वरूप को प्रतिबिम्बित करते हैं और उनकी भूमिका ग्रामीण तथा जनजातीय समाज की आजीविका में महत्वपूर्ण है। अतः अकाष्ठ वन उत्पादों के संरक्षण और मूल्यवर्धन की आवश्यकता है। कार्यक्रम के प्रथम तकनीकी सत्र में मुख्य अतिथि डा0 आरती गर्ग ने हिंदी के विकास पर बल देते हुए ग्रामीण आजीविका हेतु कुटीर उद्योग के अन्तर्गत मधुमक्खी पालन से अवगत कराया साथ ही इसको बढ़ावा देनें में राज्य सरकार की सहायता के पहलुओं से भी रूबरू कराया। आमन्त्रित वक्ता डॉ सुषमा टमटा, आचार्य कुमायू विश्वविद्यालय, नैनीताल ने ऑनलाइन माध्यम से औषधीय एवं सुगन्ध पादप के प्रबन्धन तथा व्यापार पर विस्तृत चर्चा करते हुए पहाड़ी क्षेत्र की जनजातियों की

आजीविका में इसके उपयोग पर बल दिया। उन्होंने हिमालय को औषधियों का भण्डार बताया तथा ग्रामीण आजीविका में इसके हस्तक्षेप से भी अवगत कराया। डॉ स्वर्ण लता, हिमालयन वन अनुसधान संस्थान, शिमला ने अकाष्ठ वन उत्पाद के अन्तर्गत उत्तर - पश्चिम हिमालय के शुष्क शीतोष्ण क्षेत्रों में पायी जाने वाली मूल्यवान प्रजाति चिलगोजा के उपयोग और संरक्षण पर प्रस्तुतिकरण दिया। कार्यक्रम के द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ जय कुमार, सहायक आचार्य, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची ने लघु वनोत्पाद का प्रबन्धन तथा विपणन द्वारा ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने पर बल दिया। डॉ सरला शाशनी, जी0 बी0 पन्त राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, हिमाचल क्षेत्रीय केन्द्र ने कुल्लू घाटी में ग्रामीण महिलाओं के बीच स्थायी आजीविका के संबंध में विस्तृत चर्चा की। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम समन्वयक डा0 अनीता तोमर ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराते हुए जंगल जलेबी को वसा युक्त तेल का एक अच्छा स्रोत बताया तथा इसे ग्रामीण आजीविका हेतु एक साधन बताया। केन्द्र की वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम आयोजन सचिव डॉ अनुमा श्रीवास्तव ने अमरबेल जो कि एक बहुद्देशीय पादप है, के द्वारा ग्रामीण आजीविका के संतुलन पर चर्चा की । डॉ नितिषा श्रीवास्तव, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, मध्य क्षेत्रीय केन्द्र , प्रयागराज ने फैबेसी कुल के गोंद उत्पन्न करने वाले कुछ महत्वपूर्ण पौधों से रूबरू कराते हुए आजीविका विस्तार में इसके योगदान पर चर्चा की । डॉ कल्पना मिश्रा, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स, प्रयागराज ने गैर - लकड़ी वन उत्पादः महत्व एवं आवश्यकता पर विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अन्त में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 कुमुद दूबे ने धन्यवाद् ज्ञापन किया। वास्तविक और आभाषी दोनों माध्यम से एक साथ आयोजित संगोष्ठी में उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, त्रिपुरा, आसाम, झारखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ 100 से अधिक प्रतिभागियों के हिस्सा लिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में डा0 एस0 डी0 शुक्ला तथा रतन गुप्ता के नेतृत्व में साजन कुमार के साथ योगेश कुमार, अंकुर श्रीवास्तव, अमन मिश्रा तथा फराज अहमद का विशेष सहयोग रहा।

अकाष्ठ वन उत्पादों के संरक्षण एवं मूल्यवर्धन की आवश्यकताः डा. संजय

प्रयागराज, २४ सितम्बर। पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा शुक्रवार को "ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के विषय पर आधारित सारांश पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

इस अवसर पर केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि यद्यपि वनों को मुख्यत: लकड़ी प्राप्त करने के दृष्टिकोण से देखा गया है, किन्तु अकाष्ठ वन उपज ही उनके व्यापक स्वरूप को प्रतिबिम्बित करते हैं और उनकी भूमिका ग्रामीण तथा जनजातीय समाज की आजीविका में महत्वपूर्ण है। अत: अकाष्ठ वन उत्पादों के संरक्षण और मूल्यवर्धन की आवश्यकता है। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान, मध्य क्षेत्र प्रयागराज की निदेशक डॉ. आरती गर्ग ने हिंदी के विकास पर बल देते हुए ग्रामीण आजीविका हेतु कुटीर उद्योग के अंतर्गत मधुमक्खी पालन से अवगत कराया। आचार्य कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल की आचार्य डॉ.सुषमा टमटा ने ऑनलाइन माध्यम से औषधीय एवं सुगंध पादप के प्रबंधन तथा व्यापार पर चर्चा करते हुए

पहाड़ी क्षेत्र की जनजातियों की आजीविका में इसके उपयोग पर बल दिया। उन्होने हिमालय को औषधियों का भण्डार बताया तथा ग्रामीण आजीविका में इसके हस्तक्षेप से भी अवगत कराया। डॉ. स्वर्ण लता, हिमालयन वन अनुसधान संस्थान, शिमला ने अकाष्ठ वन उत्पाद के अंतर्गत उत्तर-पश्चिम हिमालय के शुष्क शीतोष्ण क्षेत्रों में पायी जाने वाली मूल्यवान प्रजाति चिलगोजा के उपयोग और संरक्षण पर प्रस्तुतिकरण दिया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची के सहायक आचार्य डॉ.जय कुमार ने लघु वनोत्पाद का प्रबंधन तथा विपणन द्वारा ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने पर बल दिया। डॉ. सरला शाशनी, जीबी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, हिमाचल क्षेत्रीय केन्द्र ने कुल्लू घाटी में ग्रामीण महिलाओं के बीच स्थायी आजीविका के सम्बंध में चर्चा की। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम समन्वयक डॉ.अनीता तोमर ने जंगल जलेबी को वसा युक्त तेल का एक अच्छा स्रोत बताया तथा इसे ग्रामीण आजीविका हेतु एक साधन बताया। कार्यक्रम आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने अमरबेल जो कि एक बहुद्देशीय पादप है, के द्वारा ग्रामीण आजीविका के संतुलन पर चर्चा की। डॉ. नितिषा श्रीवास्तव, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, मध्य क्षेत्रीय केन्द्र, प्रयागराज ने फैबेसी कुल के गोंद उत्पन्न करने वाले कुछ महत्वपूर्ण पौधों से रूबरू कराते हुए आजीविका में योगदान पर चर्चा की। वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स डॉ. कल्पना मिश्रा ने गैर लकड़ी वन उत्पाद महत्व एवं आवश्यकता पर विचार व्यक्त किया।

CMYK